दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य (वैकल्पिक विषय)

8 Test

टेस्ट-II (प्रश्नपत्र-1)

निर्धारित समय: तीन घंटे Time allowed: Three Hours	अधिकतम अंक: 250 Maximum Marks: 250

DTVF/19 (J-S)–M–**HL2**

Name: Sumit Kumar Pandey **Mobile Number:**

Medium (English/Hindi): Hindi **Reg. Number:** FP/July-19/822

Center & Date: 23-07-2019 **UPSC Roll No.** ***(If allotted)*****:** 0847994

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:
इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं तथा हिन्दी एवं अंग्रेज़ी भाषा में मुद्रित हैं।
परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
*प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से **प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न** चुनकर किन्हीं **तीन प्रश्नों** के उत्तर दीजिये।*
प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।
*प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर **कोई अंक नहीं** मिलेंगे।*
प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।
जहाँ आवश्यक हो, अपने उत्तर को उपयुक्त चित्रों/मानचित्रों तथा आरेखों द्वारा दर्शाएँ। इन्हें प्रश्न का उत्तर देने के लिये दिये गए स्थान में ही बनाना है।
प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशतः दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:
*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS** and printed both in **HINDI & ENGLISH**.*
*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*
*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** from each section.*
The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (Q.C.A.) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.
Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.
Illustrate your answers with suitable sketches/maps and diagrams, wherever considered necessary. These shall be drawn in the space provided for answering the question itself.
Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)	प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)
1							5						
2							6						
3							7						
4							8						
							सकल योग (Grand Total)						

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

A3

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: $10 \times 5 = 50$

(क) प्रकृतवादी हिन्दी उपन्यास

प्रकृतवादी हिन्दी उपन्यास, उपन्यास की एक ऐसी धारा है जिसमें मानव मानस पटल के सूक्ष्म से सूक्ष्म चेतनाओं को खोलकर सामने रख दिया जाता है।

उपेन्द्रनाथ "अश्क", पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र', अज्ञेय इत्यादि इस धारा से जुड़े हुए रचनाकार रहे हैं।

"बेचारा मन", दरख्तों के पार, नैन रुके हुए इत्यादि इस धारा के प्रमुख उपन्यास हैं। मनुष्य का मन 'काम चेतना' के निमित हमेशा तत्पर रहता है। इसी काम चेतना अर्थात 'लीबिडो' को इन उपन्यासों के माध्यम से दर्शाया गया है। मनोविश्लेषण-वादी धारा के कुछेक गुण भी इधर देखने को मिल जाते हैं। उपन्यासों का कथानक काफी बिखरा हुआ होता है, सभी चरित्र संघर्षशील, हताश, निराश होते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थ
कुछ न लिखें।

(Please don't
anything in t

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) रामस्वरूप चतुर्वेदी के साहित्येतिहास-लेखन की विशेषताएँ

रामस्वरूप चतुर्वेदी ने उस समय साहित्य-लेखन में कदम रखा जब आचार्य शुक्ल तथा आचार्य द्विवेदी इतिहास-लेखन को दो अलग-अलग छोरों पर पकड़े हुए थे। शुक्ल जी की वैज्ञानिकता तथा द्विवेदी जी की परंपरावादी दृष्टिकोण का समन्वय समय की मांग थी। रामस्वरूप चतुर्वेदी उसी समय "हिन्दी साहित्य की संवेदना और विकास" के साथ उपस्थित हुए और शुक्ल जी तथा द्विवेदी जी के दृष्टिकोणों का समन्वय करते हुए हिन्दी साहित्य में एक नवीन दृष्टिकोण का सूत्रपात किया।

रामस्वरूप चतुर्वेदी साहित्य की परंपरा को देखते ही हैं, साथ ही रचना को पूरी वैज्ञानिकता के साथ देखते हैं, जिससे रचना का सही मूल्यांकन हो जाता है। उनकी यह पुस्तक विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए भी काफी लाभदायक सिद्ध हुई है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स
कुछ न लिखे

(Please don'
anything in

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) इप्टा का परिचय और महत्त्व

इप्टा यानी "इण्डियन पिपुल्स एसोसिएशन थियेटर" अपने स्थापना काल से ही नाटकों के सक्रिय मंचन में सजग रहा है।

रामविलास शर्मा, यशपाल, बलराज साहनी इत्यादि इसके प्रमुख सदस्य थे। "बलराज साहनी" के अभिनय के हजारों दिवाने हुए करते थे। भारतीय रंगमंच को पारसी रंगमंच के प्रभाव से मुक्त कर अपनी एक अलग पहचान दिलाने में इप्टा का बहुत बड़ा योगदान रहा है।

"इप्टा" और प्रगतिशील लेखक संघ का गहरा ताल्लुक था। इस कारण इप्टा में जन-सामान्य की समस्याओं को दर्शाती रचनाओं का बड़ी मात्रा में मंचन हुआ। मजदूर वर्ग तथा निम्न-मध्य वर्ग पहली बार रंगमंच से जुड़ा। भारत सरकार द्वारा इप्टा को प्रतिवर्ष आर्थिक सहायता प्रदान की जाती थी। नए व्यावसायिक रंगमंचों की स्थापना से इप्टा पर असर जरूर पड़ा है, परन्तु यह अभी भी उसी जोश के साथ रंगमंच के विकास में सक्रिय है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) घनानंद की काव्य-भाषा

घनानन्द की काव्यभाषा रीतिकाल की चमक-धमक वाली भाषा से अलग काफी संवेदनशील भाषा है।

"उंजरानि बसी है हमारी अँखियानी देखो"

जैसा विकार रीतिकाल की अन्य कविताओं में देखने को नहीं मिल सकता।

कारण शायद यह भी है कि घनानन्द ने इस दर्द का अनुभव स्वयं किया था। तभी तो वे कहते हैं

"लोग तो लागि कवित बनावत
मोह तो मोरे कवित बनावत"

सुजान का दर्द उनका स्वयं का दर्द है। यह किराये पर बहाये जाने वाला आँसू नहीं है, यहा कवि खुद रो रहा है।

"अति सूधो सनेह को मारग है
यहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं"

अलंकार की अधिकता नहीं है, उनका समयानुरूप प्रयोग हुआ है। केशव जैसा छन्द वैविध्य नहीं है, परन्तु हृदय का चरम सुख प्राप्त

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

किया जा सकता है। और शायद यही कारण है कि आचार्य शुक्ल घनानन्द की भाषा को रीतिकाल के सारे कवियों में सर्वश्रेष्ठ मानते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) मनोवैज्ञानिक कहानी

यूँ तो मनोवैज्ञानिक कहानियों की परंपरा प्रेमचन्द के समय से ही चलती आ रही है। ईदगाह के हामिद का मनोविज्ञान हो या सद्गति के दुखी चमार का— प्रेमचन्द हर वर्ग के मनोविज्ञान को उभारने में पूरी तरह सक्षम थे।

किन्तु जब मनोवैज्ञानिक कहानी की बात की जाती है, तो हमारा मतलब कथित तौर पर मनोविज्ञान के प्रयोग से होता है। फ्रॉयड के मनोविज्ञान की अवधारणा को अपनाकर जैनेन्द्र, इलाचन्द्र जोशी इत्यादि ने कहानियाँ लिखी, जिसमें मानव के मनोविज्ञान का सूक्ष्मतम विश्लेषण होता था।

जहाज का पंक्षी, डायरी, शिल्पी इत्यादि कहानियों में मनोवैज्ञानिक पक्ष पूरी तरह खुलकर सामने आता है। ये लोग सोचा हुआ नहीं लिखते बल्कि सोचते हुए लिखते हैं, इसलिए हर कहानी हमारे अपने आस-पास की प्रतीत होती है। कहानियों का कथानक टेढ़ी रेखाओं में चलता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कहानियों का कोई अन्त नहीं होता।

कृपया इ... कुछ न लि...

(Please d... anything...

Copyright – Drishti The Vision Foundati...

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) हिंदी साहित्येतिहास-लेखन में आचार्य रामचंद्र शुक्ल की सीमाओं का विवेचन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल को हिन्दी इतिहास लेखन में वही स्थान प्राप्त है जो हिन्दी कहानी में प्रेमचन्द को। उनके द्वारा दिए गए नामकरण सर्वमान्य है। जिन लेखकों के महानता पर उन्होंने संदेह खड़ा कर दिया, उसे बाद के समीक्षक पीढ़ी - दर - पीढ़ी तक भरपाई न कर सके।

परन्तु हर महान रचनाकार की तरह रामचन्द्र शुक्ल के इतिहास लेखन की भी कुछ सीमाएं हैं, जिन्हें नीचे वर्जित किया गया है।

परंपरा का नकार

आचार्य शुक्ल लेखक/उसकी रचनाओं पर साहित्यिक परंपरा का यथोचित महत्व नहीं दे सके। इस कारण उनका इतिहास लेखन क्षणिक परिणाम ज्यादा नजर आता है। जैसे भक्ति आन्दोलन के उद्भव को लेकर वे मुस्लिमों के आगमन को सबसे बड़ा कारण मानते हैं। बाद में द्विवेदी जी ने सिद्ध किया कि मुस्लिमों के नहीं आने के बावजूद भक्ति - साहित्य का स्वरूप ऐसा ही होता जैसा आज है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

सूर तथा कबीर का महत्व

वे सूर तथा कबीर जैसे रचनाकारों को पर्याप्त महत्व नहीं दे सके। यह सच है कि सूर के गोपियों का विह्वल अतिशयोक्ति जैसा लगता है। परन्तु इससे सूर के रचना का महत्व कम नहीं हो जाता। मैनेजर पाण्डेय ने गोचारण परंपरा के संदर्भ में इसे बहुत ही खूबसूरती के साथ वर्णित किया है।

आदिकाल का नामकरण

शुक्ल जी ने जिन 14 रचनाओं के आधार पर वीरगाथाकाल नाम रखा है। उनमें कई अप्रमाणिक हैं, कई अपने मूल रूप में आज तक प्राप्त नहीं किए जा सके हैं। पद्मावती जैसी रचनाएँ कथित से बिल्कुल ही साम्य नहीं रखती। कहा जाता है कि अगर आज शुक्ल जी होते तो इस नाम को स्वयं ही नकार देते।

Copyright – Drishti The Vision Foundatio

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

ह्रासवाद

ह्रासवाद को मात्र रहस्य के रूप में देखना शुक्ल जी की सबसे बड़ी सीमा है। शांतिप्रिय द्विवेदी, नगेन्द्र इत्यादि ने शुक्ल जी के दृष्टि को काफी वैज्ञानिकता के साथ खंडित किया है।

समसामयिक लेखक

उन्होंने अपने समय के महान रचनाकारों जैसे प्रेमचन्द पर बहुत ही कम लिखा है। वे समसामयिक लेखकों को पर्याप्त महत्व नहीं दे सके।

समग्रतः कहा जा सकता है कि शुक्ल जी के इतिहास लेखन में कुछ सीमाएँ हैं। परन्तु यह भी सच है कि उनका इतिहास हिन्दी साहित्य जगत में एक नींव की भाँति है। उसके बाद के इतिहास लेखकों ने या तो शुक्ल जी के समर्थन में या उनके खिलाफ

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

इतिहास लेखन का कार्य किया है।

कृपया इस
कुछ न लि

(Please do
anything

Copyright – Drishti The Vision Foundatio

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) मोहन राकेश की कहानियों के विषय-वैविध्य का उद्घाटन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

मोहन राकेश की कहानियाँ विषय-वैविध्य के कारण हमेशा से चर्चा का विषय रही हैं।

पहली तरह की कहानियां इतिहास के कलेवर को ओढ़े हुए वर्तमान जीवन का रहस्योद्घाटन करती है। इतिहास बस एक परत की भाँति होता है, वहीं कहानी का पूरा शरीर आधुनिक जीवन के गंभीरता को धारण किए रहता है। "उलसे से", "अभी भी वही" इस तरह की कहानियाँ है।

दूसरे तरह की कहानियों में मध्यवर्ग का संघर्ष चित्रित हुआ है। शहरीकरण तथा औद्योगिकरण के प्रभाव को बहुत ही बखूबी से वर्णित किया गया है। "आषाढ़ का एक दिन" के नायक मातृगुप्त की तरह इन कहानियों के नायक सत्ता और सृजन के द्वंद में उलझकर रह गए हैं। इन दो वर्ग की कहानियों के अलावा भी मोहन राकेश की कहानियों

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

में बहुत कुछ देखने को है। देश के विभाजन, निम्न वर्ग की गरीबी, भूखमरी, स्त्री - चेतना इत्यादि उनकी कहानियों का विषय रहे हैं।

उनकी कहानियों में मानवीय चरित्र के अलावा पशु-पक्षी, पेड़-पौधे भी कथानक का महत्वपूर्ण हिस्सा होते हैं। सूक्ष्म चिंतन अपने आप ही कथानक को आगे बढ़ाता जाता है। इस शैली के कारण एक इंसान अलग - अलग कहानियों में अलग - अलग किरदार निभाता हुआ नजर आता है। मोहन राकेश की कथा दृष्टि चूल्हे से उठते धुएँ से लेकर आसमान से छाये बादल तक जाती है, उनकी कहानियों में राजा भी एक पात्र हो सकता है तो सड़क पर चलता एक भीखारी भी। आलम्बन तथा उद्दीपन के इतने बड़े क्षेत्र के बाद अगर मोहन राकेश की कहानियों में अधिक वैविध्य

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundati

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

नजर आता है तो यह आश्चर्य का विषय नहीं होना चाहिए।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) चौथा सप्तक

चौथा सप्तक सात कवियों के कविताओं का एक संग्रह है जो अज्ञेय के संपादन में 60 के दशक में प्रकाशित हुआ।

जिस प्रकार पहला सप्तक ने ~~प्रगतिव~~ प्रयोगवाद तथा दूसरा सप्तक ने नई कविता की नींव रखी, उसी प्रकार चौथा सप्तक ने भी समकालीन कविता की नींव रखी। चौथा सप्तक में जिन सात कवियों की रचनाएँ प्रकाशित हुई उसमें रवीन्द्र भ्रमर, रमेश रंजक, अजगर वसाहत इत्यादि प्रमुख हैं।

चौथा सप्तक की कविताओं में वापस जमीन से जुड़ने की ओर जोर है। आजादी को 12-15 साल बीत चुके हैं लेकिन अब तक कोई ठोस परिवर्तन देखने को नहीं मिला है। लोगों में हताशा, निराशा तथा क्रोध का वातावरण है। इसी हताशा, निराशा और क्रोध को आवाज मिली है चौथा सप्तक में।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Found

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

"जो है उससे बेहतर चाहिए
पूरी दुनिया को साफ करने के लिए एक और
मेहतर चाहिए"

चौथा सप्तक के कवि प्रयोगशीलता - तथा प्रगति से उपर उठकर देश में क्रांतिकारी परिवर्तन का सपना देख रहे हैं। चीन का खतरा दिन - पर दिन बढ़ता जा रहा है, खाद्य - उत्पादन में भारत अभी समर्थ नहीं हुआ है। ऐसे समय के कवियों की पुस्तक है - चौथा सप्तक। चौथा सप्तक के कवियों की कविताएँ सहज कविता है, जनवादी कविता है, लोगो के द्वारा, लोगो के लिए लिखी हुई कविता है। छन्द और अलंकार का गुत्था नहीं है, लेकिन हृदय से निकली एक चीख है, यह चीख गुँजती है — हमारे कानो में, आपके कानो में।

मैं कविताएँ नहीं बनाता
मैं चीखता हूँ, चिल्लाता हूँ
गालियाँ बकता हूँ
पर हर स्थिति में वैसा का वैसा हूँ
जैसा अपनो के बीच हूँ

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस
कुछ न लि
(Please do
anything i

Copyright – Drishti The Vision Founda

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) संतकाव्यधारा और सूफीकाव्यधारा में अंतर

संत काव्य धारा	सूफी काव्य धारा
(1) ज्ञान पर बल	(1) प्रेम पर ~~बोल~~ बल
(2) पंचमेल खिचड़ी भाषा	(2) साहित्यिक भाषा
(3) इनका प्रयोग जान-बूझकर नहीं किया गया है। पर जाने-अनजाने कविताओं में उपस्थित है।	(3) अलंकार का प्रयोग प्रतीक का प्रयोग
(4) आडम्बरों पर चोट	(4) मिथकों का प्रयोग कविता में
(5) नारी से दूर रहने की सलाह देता है	(5) शृंगार वर्णन कविता का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।
(6) जगत को मिथ्या मानता है	(6) इश्क मजाजी
(7) विरह-वेदना ईश्वर के मिलन हेतु	(7) विरह-वेदना लौकिक प्रेम के प्रति
(8) धार्मिक मान्यताओं का नकार	(8) धार्मिक मान्यताएं कुहानी का हिस्सा है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस
कुछ न लि
(Please d
anything

Copyright – Drishti The Vision Founda

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ख) हिन्दी का प्रगतिवादी उपन्यास

प्रगतिवादी का शाब्दिक अर्थ आगे बढ़ने से है परन्तु हिन्दी साहित्य में प्रगतिवादी उपन्यास का अर्थ सामान्यतः मार्क्सवाद से लगाया जाता है।

इस तरह के उपन्यासों में निम्न-वर्ग केन्द्र में होता है। समाज में व्याप्त विषमताओं को कथानक के माध्यम से उभारने का प्रयास किया जाता है। उपन्यास आदर्शोन्मुख न होकर पूर्णतः यथार्थवादी होता है।

यशपाल के दिव्या, पार्टी कॉमरेड, दादा कॉमरेड, नागार्जुन के बाबा बटेसरनाथ, वरुणनाथ के बेटे, निराला के कुल्ली उपन्यास इसी तरह के उपन्यास हैं। देश के विभाजन से जुड़े बहुत सारे उपन्यासों को इसी वर्ग में रखा जा सकता है। इन उपन्यासों की रचना समाज में वांछनीय परिवर्तन हेतु की जाती है। "कितने टुकड़े" नामक एक नवीन उपन्यास इसी श्रृंखला को आगे बढ़ाता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इ
कुछ न

(Please
anything

Copyright – Drishti The Vision Found

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) प्रपद्यवाद

प्रपद्यवाद अथवा नकेनवाद आजादी के पूर्व चला एक काव्य आन्दोलन था। नलिन विलोचन शर्मा, केसरी कुमार तथा नरेश कुमार इसके प्रणेता हैं।

इनका मानना था कि चूँकि इनकी रचनाएँ प्रयोगवाद के कवियों से पहले प्रकाशित हुई हैं तथा ये प्रयोग को साध्य के रूप में प्रयोग करते हैं (अज्ञेय प्रयोग को साधन मानते थे, साध्य नहीं) इन्हें ही प्रयोगवाद के अग्रज कवि माना जाना चाहिए। लेकिन इनके इस विचार को हिन्दी साहित्य जगत में मान्यता नहीं मिली।

प्रयोग के नाम पर इनकी कविताओं में कुछ खास नहीं है। कई बार तो भाषिक त्रुटियाँ हृदय को ठेस पहुँचाने लगती हैं। यौन वर्जना का अतिक्रमण इनकी कविताओं का मुख्य विषय है जो अकविता का पूर्वज लगता है, प्रयोगवाद का नहीं।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foun

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) निराला की कविता 'तुलसीदास' का 'प्रतिपाद्य'

निराला की कविता "तुलसीदास" एक प्रौढ़तम कविता है। निराला को एक प्रतिष्ठित कवि के रूप में पहचान बनाने में इस कविता का बहुत बड़ा योगदान रहा है। निराला ने तुलसीदास के प्रयोगशीलता तथा तत्कालीन समाज के मान्यताओं से इतर जाते हुए दिखाया है, जो निराला के स्वयं का भी स्वभाव था। तुलसीदास को तथाकथित निम्न जातियों के न्याय के लिए लड़ते हुए दिखाया गया है। तुलसीदास एक ऐसे समाज की रचना करना चाहते थे, जहाँ छोटे-बड़े अमीर-गरीब का भेद मिट जाए।

तुलसीदास के इसी रूप को निराला ने शब्दों में पिरोया है। तुलसीदास को एक सामान्य मानव के रूप में हताश व निराश भी दिखाया गया है, जो शायद निराला के स्वयं के जीवन का संघर्ष है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया
कुछ न
(Pleas
anythi

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Fo

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) आंचलिक कहानी का परिचय

आंचलिक कहानी उस कहानी को कहते हैं, जिसमें अंचल विशेष मात्र बाकी सारे चरित्रों पर पूरी कथा के दौरान हावी रहता है। अगर कहानी से उस अंचल विशेष मात्र को हटा लिया जाए तो पूरा का पूरा कथानक धराशायी होकर गिर पड़ेगा।

काशीनाथ सिंह के 'रेहन पर रग्घू' ऐसी ही कहानी है। "नंगातलाई का गाँव", "कोसी नदी", "पूरबी हवा" इत्यादि ऐसी ही कहानियाँ है। फणीश्वरनाथ रेणु की सभी कहानियों को इस श्रेणी में रखा जा सकता है।

समकालीन समय में अनिल कुमार यादव, राजी सेठ, संजीव इत्यादि ने आंचलिक कहानियों को फिर से जीवित करने का प्रयास किया है। रंजीत साही के नये कहानी संग्रह "अपना गाँव अपना देश" की कहानियाँ आंचलिकता के कलेवर को समेटे हुए है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया
कुछ न
(Please
anythi

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Fou

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) छायावादी कविता की 'सौंदर्य-चेतना' पर प्रकाश डालिये। 20

छायावादी कविता की सौंदर्य - चेतना रीतिकाल के कविताओं को टक्कर देती नजर आती है। यहाँ न तो रीतिकालिन दरबार के नायिका का सौन्दर्य है और न ही उसे देखने वाले रसविलासिकों की दृष्टि, परन्तु नवीन छन्दों के सुन्दर जाल से जो कुछ भी निर्मित होता है वह देखते ही बनता है।

मानवीकरण

" आसमान से उतर रही
संध्या परी
धीरे - धीरे - धीरे "

इतनी सामान्य सी भाषा में भी सौन्दर्य - प्रभाव जैसे फुट सा पड़ा है।

रहस्य तथा सौन्दर्य

" मेरे प्रियतम को भाग है
तम के पर्दे में आना "

रहस्य तथा सौन्दर्य का ऐसा सुन्दर वर्णन अन्यत्र कहीं देखने को न मिलेगा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जयशंकर प्रसाद के कामायनी की पँक्तियाँ देखिये

" नील परिधान बीच
सुकुमार सा ~~खील~~ खिल रहा "

ऐसा सौन्दर्य वर्णन जो आँखों के सामने से गुजरता हुआ चला जाता है।

ऐसे ही निराला अपनी बेटी के बारे में कविता लिखकर सारी लोक-मर्यादाओं का ध्यान रखते हुए भी सौन्दर्य-दृष्टि का अद्भुत नमूना प्रस्तुत करते हैं।

" नयनों का नयनों का गोपन संभाषण
पलकों का नवपलकों पर प्रत्यभोत्थान पतन "

राम और सीता के बीच पनप रहे प्रेम का ऐसा सुन्दर वर्णन।

छायावाद की सौन्दर्य चेतना केवल मानव जीवन तक ही सीमित नही है यह प्रकृति से होकर गुजरती है

" गाते वे खग कल-कल स्वर से"

या फिर
"झर-झर-झर निर्झर गिरी शर से"

Copyright – Drishti The Vision Fou

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

छायावादी कवियों की विरह - चेतना में भी सौन्दर्य की अनुभूति होती है।

"मेरे गीले अधर छुओं मत
मुरझाई कलियाँ देखो"

छायावादी कवि गर्मी के दोपहर में एक काम करने वाली युवती में भी सौन्दर्य- दर्शन कर लेते हैं।

"नत नयन
प्रिय कर्मरत मन
करती - बार - बार प्रहार
सामने तरु अट्टालिका विशाल"

इनकी सौन्दर्य दृष्टि एक भीख माँगने वाले तक पर टिक जाती है।

"वह आता
पेट - पीठ दोनों हैं एक
चल रहा लकुटीया टेक"

समग्रतः कहा जा सकता है कि छायावादी कविता की सौन्दर्य चेतना वैविध्यपूर्ण तथा उत्कृष्ट है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

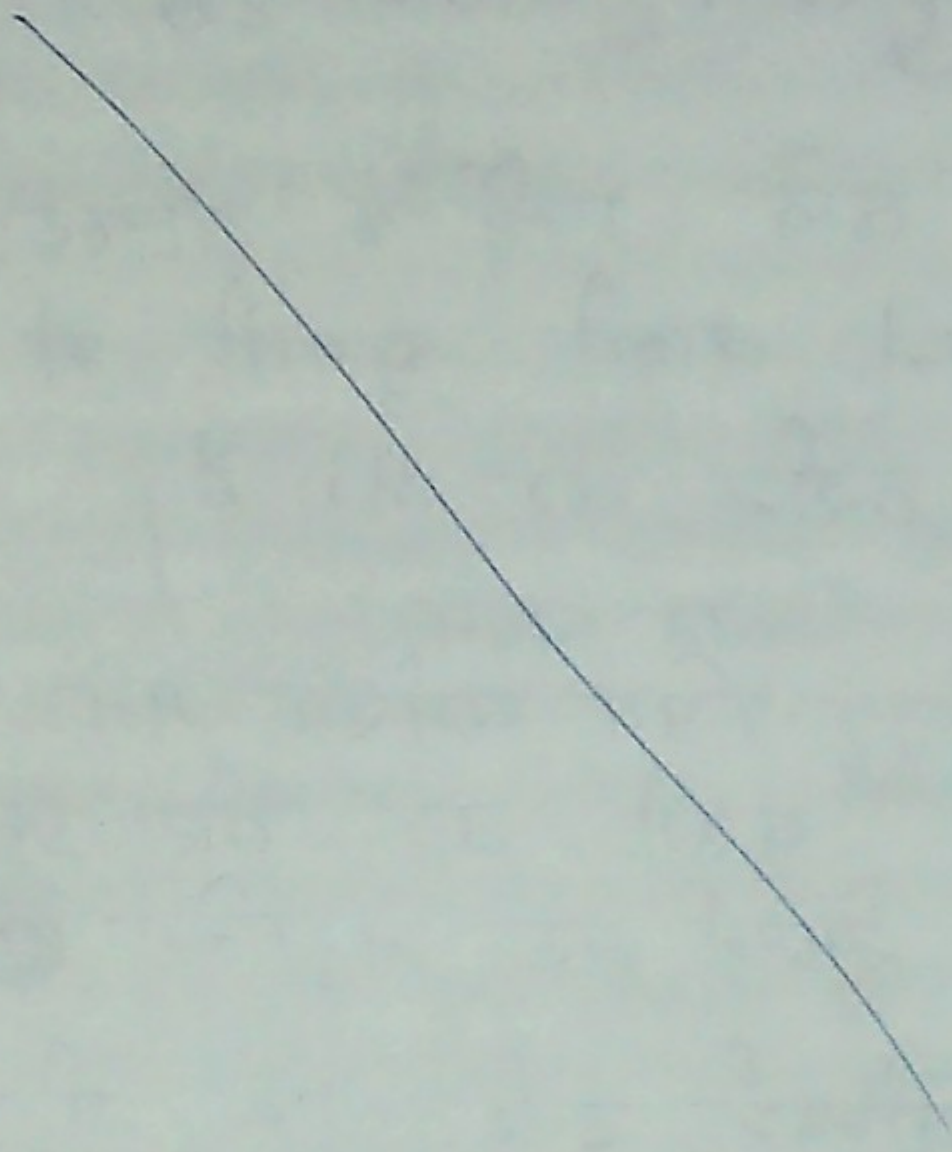

कृपया
कुछ न
(Please
anythi

Copyright – Drishti The Vision Fo

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी की 'नया उपन्यास' धारा पर प्रकाश डालिये। 15

हिन्दी के उपन्यास में "नया उपन्यास" का सम्बन्ध "नयी कविता" के समानान्तर उपजी एक विचार धारा से है। जो स्वतंत्रता के पश्चात् विकास की धीमी गति से हताश है, निराश है, परेशान है। स्वतंत्रता के उपरांत लोगो को लगा था कि उनकी सारी समस्याओं का समाधान मिल गया पर ऐसा हुआ नहीं, सबकुछ वैसा का वैसा ही है। इसी हताशा और निराशा का बयानक तैयार कर "नया उपन्यास" नाम से उपन्यास लिखे गए।

राजेन्द्र यादव, उपेन्द्र नाथ अश्क, धर्मवीर भारती इत्यादि उपन्यास के इस धारा के प्रमुख लेखक है। हानूश, कविरा खड़ा बाजार में, गुनाहों का देवता इत्यादि उपन्यासों में तत्कालीन अर्थहीनता, निराशा और हताशा

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

के भाव को बखूबी चित्रित किया गया है। मनोवैज्ञानिक उपन्यासों की तरह यह भी कथानक टेढ़ी - मेढ़ी रेखाओं में चलता है। सभी चरित्र अपने- अपने संघर्ष में व्यस्त हैं, कोई भी अपने जीवन से खुश नहीं है। सभी कहीं जा रहे हैं — कहाँ जा रहे? नहीं पता।

इन उपन्यासों के चरित्र सामान्यत: शहरी मध्यवर्ग के हैं। एक तो उनके पास गाँव छोड़ कर शहर आ जाने का दुःख है तो वही दूसरी तरफ शहर में अजनबीपन जैसे व्यवहार से उठी टीस। कहाँ जाएं क्या करें। इसी उधेड़बुन में व्यतीत होती ज़िन्दगी बस यूँ ही बीती जा रही है और ऐसी बीती जा रही है कि चरित्र इस ज़िन्दगी पर सवाल उठाने को मजबूर हो जाते हैं। यही उपन्यास है — "नया उपन्यास"।

Copyright – Drishti The Vision Fo

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) केशवदास के कविकर्म की मौलिकता पर विचार कीजिये।

केशवदास रीतिकाल के एक अत्यन्त ही महत्वपूर्ण कवि हैं।

कविकर्म की मौलिकता

आचार्य — ये कोई ~~नयी~~ नए सिद्धांत की स्थापना तो नहीं करते, परन्तु उसे हिन्दी भाषा में लाने में इनका प्रमुख योगदान है।

छन्द-वैविध्य — इनकी कविताओं को छन्दों का अजायबघर कहा जाता है। केशवदास जैसे छन्द प्रयोग हिन्दी साहित्य जगत में शायद ही किसी अन्य कवि ने किए हो।

संवाद वर्णन

केशवदास का अंगद-रावण, लक्ष्मण-विभीषण संवाद नवीनता को धारण किए हुए हैं।

"राम को काम कहाँ, रिपु जित्यौ, — — —"

Copyright – Drishti The Vision F

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

राजसी वर्णन

वाल्मीकि तथा तुलसीदास के राम के वर्णन में मानवीकरण ज्यादा है। राम के राजकीय रूप को केशवदास ने जीवंतता प्रदान की है।

शब्द तथा वाक्य

छोटे-छोटे शब्द तथा वाक्यों के निर्माण में केशवदास को महानता हासिल है।

विराम चिन्ह तथा अन्य चिन्ह

सभी कविता का हिस्सा हो जाते हैं, जो आगे चलकर निराला की कविताओं में भी देखने को मिलता है।

समग्रतः कहा जा सकता है केशवदास एक मौलिक कवि हैं, जिनके प्रयोगों ने आगे आने वाले कवियों के लिए मार्ग का काम किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

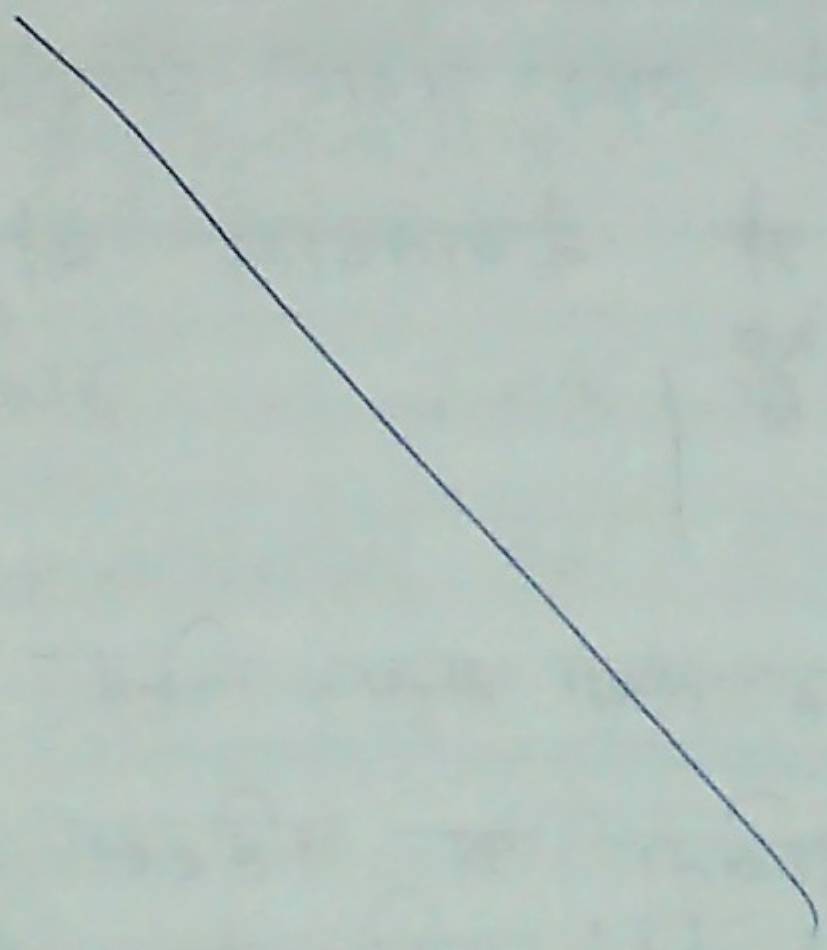

Copyright – Drishti The Vision Fo

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'छायावाद पलायन का काव्य है।' इस मत पर विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"छायावाद पलायन का काव्य है।" यह विचार बहुत सारे समीक्षकों का है।

"ले चल मुझे भुलावा देकर
मेरे नाविक धीरे - धीरे"

हाँ या फिर

"हारता रहा मैं स्वर्ग - समर"

महादेवी वर्मा का

"मेरे गीले पलक छुओ मत
मुरझाई कलियाँ देखो"

या फिर

"धन्ये! निरर्थक पिता
तेरे हित कुछ कर न सका"

इन सभी से पलायन की ही बू नजर आती है। परन्तु यह केवल अर्ध-सत्य है। छायावाद के कवियों की बहुत सारी रचनाओं में हमें

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

राष्ट्रप्रेम तथा शक्ति जैसी भावनाओं का भी बोध होता है।

जैसे —

" जाग तुझको दूर जाना "

या फिर

" शेरों की माँद में
आज आया है सियार "

निराला की कविता राम की शक्ति पूजा तो सम्पूर्ण शक्ति को समर्पित काव्य है।

" होगी जय, होगी जय
हे पुरुषोतम नवीन "

जयशंकर प्रसाद के नाटकों में वर्णित कविताएँ सैनिकों के नशा में उफान ला देने के लिए पर्याप्त है। कार्नेलिया कहती है।

दृष्टि The Vision

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision F

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

"तुम अमर्त्य वीर पुत्र हो
दृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो"

इसी प्रकार दिनकर के काव्य कुरुक्षेत्र, हुंकार इत्यादि में वीरता के पर्याप्त लक्षण मिलते हैं, जो छायावाद के समय ही रची गई थी। असल में जब छायावाद को रहस्यवाद भर से सीमित कर दिया जाता है तभी ऐसी निरर्थक आलोचना सामने आती है। असल में छायावाद "रहस्यवाद" के अलावा भी और कुछ है, और यह "और" ही सब कुछ है। छायावाद राष्ट्रीयता का काव्य है। छायावाद शक्ति की मौलिक कल्पना का काव्य है। छायावाद जन-जागरण का काव्य है। छायावाद नवीन-चेतना का काव्य है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything on this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

Copyright – Drishti The Vision F

(ख) दिनकर की काव्यकृति 'रश्मिरथी' के प्रतिपाद्य पर प्रकाश डालिये। 15

दिनकर ने महाभारत के कहानियों का आधार बनाकर बहुत सारी कविताएँ लिखी है - जिनमें रश्मिरथी एक प्रमुख काव्य है।

रश्मिरथी कर्ण पर आधारित काव्य है। अन्य कवियों द्वारा वर्णित कर्ण के नकारात्मक चरित्र को सकारात्मक रूप में परिवर्तित करने का सफल प्रयास है यह कविता। कर्ण एक मित्र के रूप में, एक पुत्र के रूप में, एक भाई के रूप में अपने दिए गए वचनों को निभाता है। उसकी गलती मात्र इतनी है कि युद्ध के समय वह दुर्योधन की तरफ से युद्ध कर रहा है। परन्तु यह कर्ण के चरित्र को मलिन नहीं कर सकता। वह एक महान

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

योद्धा है। दुर्योधन को दिए अपने वचन को मरते दम तक पूरा करता है, कुन्ती को दिए अपने वचन को मरते दम तक पूरा करता है।

कर्ण के बाहरी तथा आंतरिक चरित्र का बहुत ही खुबसूरत वर्णन "रश्मिरथि" मे किया गया है। कविता का स्वर बहुत ही ओजपूर्ण है। कहानी के माध्यम से हमें अपने कर्तव्यों के प्रति वफादार रहने की प्रेरणा भी मिलती है। कर्ण का जीवन-दर्शन भी इस कविता के माध्यम से व्यक्त हुआ है, जो अत्यन्त ही सारगर्भित है। समग्रतः कहा जा सकता है कर्ण का चरित्र काव्य "रश्मिरथि" उसे एक महान योद्धा के रुप में हमारे मानस पटल पर प्रतिष्ठित करता है।

Copyright – Drishti The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिंदी रंगमंच की विकास-यात्रा में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

हिंदी रंगमंच को वर्तमान रूप देने में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय का बहुत बड़ा योगदान रहा है। इसकी स्थापना नाटक अकादमी के तत्वाधान में हुई थी, परन्तु अब यह स्वयं-संचालित रूप से काम करता है।

नाटक के क्षेत्र में जाने वाले छात्रों के लिए राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में नामांकन प्रतिष्ठा का विषय माना जाता है। ओम पुरी, नासिरुद्दीन शाह, मनोज वाजपेयी इत्यादि बेहतरीन कलाकार राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से ही पढ़े हुए हैं।

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय द्वारा "भारतीय रंग महोत्सव" पूरे देश के लिए गर्व का विषय था। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय समय-समय

Copyright – Drishti The Vision F

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पर नाटकों का मंचन करता रहता है, जिसने इस लुप्त होती परंपरा को जीवित रखा है। इस संस्थान द्वारा विदेशों में भी प्रस्तुति दी जाती है।

- राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय ने हिन्दी रंगमंच को पारसी रंगमंच के प्रभाव से हटाकर एक नवीन पहचान दिलाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। परिधान तथा परदों से ध्यान हटकर मानवीय संवेदनाओं पर केन्द्रित नाट्य पहली बार राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय द्वारा ही प्रस्तुत किए गए। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय ने बॉलीवुड में अच्छी कहानियों के जीवंत रूपांतरण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय आज भी हिन्दी रंगमंच के विकास में सक्रिय है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation